* शारीरिक दोष में सुधार लाकर -

पिछड़ेपन का एक प्रमुख कारण शारीरिक दोष भी होता है जैसे श्रवण-दृष्टिदोष भाषा सम्बंधी दोषकारण है जिसके कारण बालक पिछड़ने लगता है। ये दोष ऐसे है जिन्हे उपचार करके कम किया जा सकता है। माता-पिता अभिभावक शिक्षक, समाज के लोगों द्वारा प्रोत्साहित किये जाने पर ऐसे बालकों को पिछड़ेपन से बहुत ज्यादा मदद मिलती है।

* विशेष कक्षा -

इस प्रकार के बालकों की शैक्षिक क्षमता सामान्य बालकों से कम होने के कारण अपनी कक्षा में पिछड़ जाते है इसलिए इस प्रकार के बालकों के लिए अगर अलग से कक्षा में शिक्षा की व्यवस्था होती है तो शिक्षा के प्रति रुचि एवं समायोजन अच्छा होगा।

* पाठ्यक्रम में बदलाव -

कोई भी पाठ्यक्रम बनाते समय सामान्य बालक एवं प्रतिभाशाली बालकों का विशेष ध्यान दिया जाता है जिसके कारण पिछड़े बालक अपनी कक्षा के छात्रों से और अधिक पिछड़ जाते है इसलिए अगर अलग से पिछड़े बालकों के लिए पाठ्यक्रम बनाया जाय तो इन बालकों को शिक्षा में ज्यादा मदद मिलेगी।

उपयुक्त वातावरण -

बालकों पर शारीरिक एवं मानसिक रूप से वातावरण का प्रभाव पड़ता है इसलिए बालकों के पिछड़ेपन का प्रमुख कारण घरेलू एवं स्कूली वातावरण होता है इसलिए इस प्रकार के बालकों के घर पर किताब कापी, पेंसिल एवं कलम आदि की पर्याप्त व्यवस्था हो एवं घर पर शैक्षिक निर्देशन किसी योग्य व्यक्ति द्वारा किया जाना चाहिए।

पिछड़े बालक की समस्याएँ Problems of Backward Children

* पिछड़े बालक को कक्षा का पाठ्यक्रम काफी कठिन लगता है जिसे वह समझ नहीं पाते हैं एवं सहकक्षी बालकों की तुलना में पिछड़े रह जाते हैं।
* ऐसे बालकों की मनोवृत्ति विद्यालय एवं शिक्षकों के प्रति नकारात्मक होती है क्योंकि उनका मजाक उड़ाया जाता है जिससे उनमें संवेगात्मक समस्याएँ अधिक होती हैं
* ऐसे बालकों में पढ़ने-लिखने एवं सीखने की प्रेरणा बहुत कम मिलती है
* ऐसे बालकों में आत्मविश्वास, मनोबल एवं आत्मनिर्भरता जैसा कोई गुण नहीं विकसित कर पाते हैं।
* ऐसे बालक तनावग्रस्त एवं चिन्तित रहते हैं क्योंकि वे अनुभव करने लगते हैं कि उनकी शैक्षिक उपलब्धि काफी पिछे रह गयी है

पिछड़े बालक की शिक्षा एवं समायोजन-

शैक्षिक रूप से पिछड़ जाने के कारण ये बालक विद्यालय एवं समाज से दूरी बनाने लगते हैं इसलिए इस प्रकार के बालकों की शिक्षा एवं उनके समायोजन के लिए विशेष उपबंध किये गये हैं।

मानसिक क्षमता के अनुकूल शिक्षा -

मन्द बुद्धि के कारण पिछड़ने वाले बालकों की संख्या लगभग 15% है इस ये बालक सामान्य बालकों के लिए बनाये गये पाठ्यक्रम को ठीक ढंग से नहीं समझ पाते हैं और वे कक्षा में पिछड़ जाते हैं इसलिए इन बालकों के अनुरूप विशेष पाठ्यक्रम बनाकर ठीक ढंग से शिक्षा दिया जाना चाहिए।

व्यक्तिगत ध्यान—

समाज, परीवार एवं शिक्षकों द्वारा पिछड़े बालकों के कारणों का पता लगाकर इनके पिछड़ेपन को दूर किया जा सकता है।